International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 11-01-2025, Accepted: 12-02-2025, Published: 27-02-2025
Volume 11, Issue 1, 2025, Page No. 41-45

# वर्तमान में लघुकथा का परिवर्तित स्वरूप

**राज किशन परमार[1], डॉ. मंजु चतुर्वेदी[2]**

[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी संकाय, पेसिफिक अकादमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान, भारत

[2] प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी संकाय, पेसिफिक अकादमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान, भारत

**सारांश**

आज हिन्दी गद्य साहित्य के अंतर्गत 'लघुकथा' पूर्णतया प्रतिष्ठित हो चुकी विधा है। लघुकथा के बीज रूप से लेकर वृक्ष बन जाने तक के सफर में अनेक लघुकथाकारों का अपूर्व योगदान रहा है। समय के साथ–साथ कथाकारों ने इसके रूप, आकार, विषयों व भाषा शैली में बदलाव किया। आज आधुनिक समय में 'लघुकथा' नये रूप में समय के साथ चलने को तैयार खड़ी है। पहले लघुकथा धर्म, शिक्षा, नीति आदि की बात करती थी, वहीं आज लघुकथा यथार्थ को प्रकट करने का कार्य कर रही है। ष्आधुनिक युग में जीवन इतना बहुमुखी, दुरूह, जटिल, सामाजिक, राजनीतिक एवं विशाल हो गया है कि परिवर्तित संदर्भ एवं परिप्रेक्ष्य में और युग परिवेशगत परिस्थितियों के दबाव में मानवीय सम्बन्धों में उल्लेखनीय बदलाव आया है।[1]

**मूल शब्दः** लघुकथा, संवेदना, मानवीय संबंध, राजनीति, परंपरा, संस्कार, चेतना, विकृतियाँ, स्वार्थपरता, संवेदनशीलता, नैतिकता

## लघुकथा का स्वरुप

आधुनिकता के फलस्वरूप ''मनुष्यता की जगह स्वार्थपरता, जटिलता, विवेकशून्यता और हृदयहीनता जैसी विकृतियों ने अपना डेरा डाल दिया है और वह मानवीय सम्बन्धों की ऊष्मा पूरी तरह खो बैठा है। यह स्थिति आज की भौतिकता और यांत्रिकता के कारण पैदा हुई है। इन्सान जीवधारी की जगह मशीन हो गया है जिसमें न संवेदना रह गयी है, न मनुष्यता। ऐसी स्थिति में उसके लिए पिता, माता, भाई–बहन, और पति–पत्नी के रिश्ते नगण्य रह गये है और उसके शेष रह गयी है एक मात्र स्वार्थ लिप्सा, वह नितांत वैयक्तिक हो गया है[2]। इसलिए आधुनिक समय में हो रहे विविध परिवर्तनों से उत्पन्न विकट परिस्थितियों को तत्कालीन लघुकथाकारों ने पहचाना और उन पर अपनी संवेदना प्रकट करने के लिए अनेक लघुकथाओं का सृजन किया।

'लघुकथा में आये इन समय सापेक्ष परिवर्तनों को लघुकथाकारों ने लघुकथा के विषयों के रूप में अपनाया। इन लघुकथाकारों के अंतर्गत हरिशंकर परसाई, सतीश दुबे, भगीरथ, रमेश बतरा, पृथ्वीराज अरोड़ा, बलराम अग्रवाल, जगदीश कश्यप, कमल चोपड़ा, असगर वजाहत, विक्रम सोनी, सुकेश साहनी, माधव नागदा, रामकुमार आत्रेय, रामेश्वर काम्बोज, हिमांशु, चौतन्य त्रिवेदी, दीपक मशाल, चित्रा मुद्गल, युगल, विष्णु नागर, रवीन्द्र वर्मा, मुकेश वर्मा, मधुदीप, जसबीर चावला, सुभाष नीरव, सूर्यकांत नागर, मोहन राकेश, सतीशराज पुष्करणा, ज्ञानदेव मुकेश, मनोज सोनगरा, केदारनाथ आदि को लिया जा सकता है। इन्होंने अपने सृजन से तत्कालीन समाज में व्याप्त विविध विसंगतियों की तरफ ध्यान आकर्षित किया। वर्तमान समय में भी अनेक लघुकथाकार इन्हीं की तरह परम्परा को आगे बढ़ा रहे है। वर्तमान में रामकुमार घोटड़, डॉ. सुरेन्द्र गुप्त, देव शर्मा, त्रिलोकसिह ठकुरेला, शिखा कौशिक 'नूतन, अर्चना ठाकुर, अशोक भाटिया, अशोक लव, डॉ. नीना छिब्बर, अलका अग्रवाल, आलोक कुमार सातपुते, शंकर पुणतांबेकर, निशान्तर, खेमकरण सोमन आदि अनेक लघुकथाकार पाठकों को वर्तमान परिस्थितियों से रूबरू कराने की कोशिश कर रहे है।

साथ ही यह बताने की भी कोशिश कर रहे है कि आधुनिकता का अर्थ जीवन–मूल्यों को या प्राचीन सामाजिक मूल्यों को खोना नहीं है, जगदीश गुप्त के शब्दों में, ''आधुनिकता का अर्थ पुरातन को गाली देना नहीं है वरन् सारग्राहिणी तत्त्व दृष्टि के साथ विगत सांस्कृतिक समृद्धि को आत्मसात् करते हुए मानव की वर्तमान नियति एवं उसके भावी विकास के प्रति दायित्व का विशिष्ट एवं सक्रिय अनुभव करना है।[3] आज के लघुकथाकार 'आधुनिकताबोधयुक्त लघुकथाओं का सृजन कर रहें है इनके अनुसार 'आधुनिकताबोध से अभिप्राय इस प्रकार है–

'आधुनिकता' के साथ जब 'बोध' शब्द जुड़ जाता है, तब एक नवीन अर्थ उत्पन्न होता है। अज्ञेय के अनुसार, 'बोध' शब्द संस्कृत की बुद्ध धातु से बना है जिसका अर्थ है– जानना। 'बोध' शब्द व्यापक चेतना का वाहक है। इसे हम स्वयं को और अपने परिपार्श्व के वातावरण को समझने तथा उसकी वस्तु स्थिति के मूल्यांकन की शक्ति भी कह सकते हैं।[4]

'बोध' शब्द का अर्थ है 'ज्ञान', 'जानकारी, भ्रम या अज्ञान का अभाव'।

आधुनिकता क्या है? मनुष्य जीवन में इसका क्या योगदान है ? यथार्थ परिस्थितियों पर इसका क्या और कैसे प्रभाव पड़ता है? आधुनिकता के किस स्वरूप को हम अपने जीवन में उतार रहे हैं ? आधुनिकता के बारे में सभी तरह का ज्ञान प्राप्त करना तथा इसके बारे में फैले भ्रम से बाहर निकालने की दृष्टि ही आधुनिकता बोध को विकसित करने में संलग्न है।

इस प्रकार यदि आधुनिकता एक काल सापेक्ष्य शब्द है तो आधुनिकता बोध उस शब्द को समझने की चेतना है। आधुनिकता के प्रभाव को समझने के लिए 'आधुनिकता बोध' की दृष्टि होना आवश्यक है। समग्र रूप से आधुनिकता बोध का अर्थ है– वर्तमान का बोध, वर्तमान में जीवंत ज्ञान व नवीन विचारों का बोध, वर्तमान सामाजिक स्थिति जिनसे मनुष्य अपने भ्रमों को दूर करने का प्रयास करता है।

आधुनिक पीढ़ी न सिर्फ पुराने जीवन मूल्यों को खोती जा रही है. बल्कि भावी पीढ़ी को देने के लिए भी उसके पास कुछ नहीं है। संस्कारो से उसका नाता टूटता नजर आ रहा है। आज के समय में हर रिश्ता अविश्वास की परिधि में घिरता हुआ नजर आता है। स्वार्थ रूपी राक्षस सभी रिश्तों की गरिमा को खाने पर तुला हुआ है। हर रिश्ता चाहे मां–बेटा, पिता–पुत्र, पति–पत्नी, सास–बहू हो या भाई–बहन इस स्वार्थरूपी लिप्सा से घिरता जा रहा है।

ज्ञानदेव मुकेश की 'सार्थकता और 'बेटी' लघुकथा कहीं न कहीं आधुनिक स्वार्थों से लिपटी नजर आती है–

**सार्थकता**

पिता की उम्र 60 के करीब थी। वो मृत्यु शैय्या पर थे। डॉक्टरों ने अपना निर्णय सुना दिया था, इनका अंत कभी भी हो सकता है। उनका पुत्र बड़ा व्यग्र था। इस व्यग्रता का कारण आश्चर्यजनक था। पिता की सरकारी नौकरी के मात्र दो माह शेष बचे थे। इस बीच वे संसार छोड जाते तो बेटे को अनुकंपा पर सरकारी नौकरी मिल जाती। बेटा अकेले में सोचता, पिता तो जा ही रहे है, कम से कम नौकरी तो देते जाते। परन्तु प्रारब्ध पर भला किसी का वश चला है? जो चीज जिस समय पर तय है, उसी समय पर होगी। उनकी बीमारी खिंचती जा रही थी और 60 की आयु निकट आती जा रही थी। एक दिन दुःखी पिता ने पुत्र को पास बुलाया और कहा, बेटा, मैं अपने जीवन को सार्थक नहीं बना सका। मैं तुम्हें ऐसी शिक्षा नहीं दे सका कि तुम्हें अच्छी नौकरी मिल सके। मुझे क्षमा करना।

यह सुन बेटे की आंखों में अचानक चमक आ गई। उसने मन–ही–मन कहा, 'पिताजी आपका जीवन सार्थक नहीं हो सका तो क्या हुआ, आपकी मृत्यु जरूर सार्थक होगी।'

अगले ही दिन पिताजी काल–कवलित हो गए। शोक में आए लोगों ने देखा, मृत पिता के गले पर कोई गहरा निशान है, मगर वे चुप रहे। जल्दी ही पुत्र को अनुकंपा पर नौकरी मिल गई। प्रारब्ध बदल गया था और पिता की मृत्यु सार्थक हो गई थी।[5]

पुत्र द्वारा अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए पिता की हत्या कर दी जाती है। इसी तरह 'बेटी लघुकथा में भी कहीं न कहीं पिता तुल्य मनुष्य की बदली हुई मानसिकता को प्रकट किया गया है।

**बेटी' लघुकथा**

'ट्रेन में पिता और बेटी सफर कर रहे थे। दोनों आमने–सामने बेठे थे। बेटी के बगल में उसी की उम्र की एक अन्य लड़की बैठी हुई थी। लड़की सुन्दर थी। पिता उस लड़की के रूप लावण्य पर मोहित थे। दो–चार पल बीच देकर वे उस लड़की को निहार लेते थे। यह क्रम काफी देर चलता रहा। लड़की का ध्यान उस और गया। उसे एक पितातुल्य व्यक्ति का यह आचरण पसंद नहीं आया। उसने पूछा, 'महाशय आप मुझे ही घूर रहे है, अपने साथ जा रही लड़की को क्यों नहीं घूरते ? पिता ने तमतमाकर जोर से कहा, 'वो मेरी बेटी है। इस पर उस लड़की ने छूटते ही पूछा, तो क्या मैं आपकी बेटी नहीं हूँ? यह सुनकर उस व्यक्ति की आँखे शर्म से झुक गई।''

निश्चित ही यह लघुकथा आधुनिक समय की मानसिकता को ही प्रकट करती है। अगर हर व्यक्ति लड़की में बहन, बेटी का रूप देखे तो बलात्कार जैसी घटनाएँ देश और समाज में घटित ही न हो, जो कि आज की मुख्य समस्या है।

इसी क्रम में वर्तमान समस्याओं को ही उजागर करती हुई ज्ञानदेव मुकेश की 'राजनीति' और 'मेहनत करने वाले' अन्य लघुकथाएँ भी है।[6]

कमल चोपड़ा एक ऐसे लघुकथाकार है, जिन्होने अपनी लघु कथाओं के अंतर्गत देश व समाज में व्याप्त ज्वलंत समस्याओं को निशाना बनाया। उनकी प्रत्येक लघुकथा 'छोनू', 'इतनी दूर', 'छत', 'खेल', 'चुंगल', 'छिपा हुआ दर्द', ' खौफ', 'वेल्यू आदि अच्छे उदाहरण है। आज के समय में बच्चों के पास माता–पिता के लिए समय ही नहीं है। महानगरीय जीवन शैली में एक ही बिल्डिंग में रहते हुए बेटे को पिता से मिलने की फुर्सत नहीं है। 'इतनी दूर' लघुकथा की कुछ पंक्तियाँ भावुकता से भरी होने के साथ ही आधुनिक समय की मूल्यहीन मानसिकता को उजागर करती है–

''दरवाजा तोड़ा गया। सामने ईजी चेयर पर बाबूजी बेजान पड़े थे। गर्दन एक तरफ को लुढ़की पड़ी थी। उनकी खुली हुई आँखे दरवाजे की ओर ताक रही थी जैसे किसी का इंतजार कर रही हो।[7]

इसी तरह 'छोनू लघुकथा में–

''मैं छिक्ख छुक्ख नई यूँ....
मैं बीज ऊज नई अंऊ..
मैं तो छोनू हूँ।....[8]

आधुनिक समय में औद्योगिकरण, बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा के कारण मनुष्य–मनुष्य न होकर मशीन का पुर्जा बन गया है। घर–परिवार के लिए उसके पास समय ही नहीं है। रमेश बतरा की लघुकथा 'कहूँ कहानी कहीं न कहीं आधुनिक व्यथा को प्रकट करती है–

''ए रफीक भाई। सुनो... उत्पादन के सुख से भरपूर थकान की खुमारी लिए, रात में घर पहुँचा तो मेरी बेटी ने एक कहानी कही.. .''एक लाजा है, वो बोत गलीब है।'[9]

यह लघुकथा बढ़ते औद्योगिकरण के प्रभाव से उत्पन्न पारिवारिक विघटन को प्रकट करती है। आज का मनुष्य सिर्फ पैसों के पीछे भागता है, रिश्तों की गरमाहट ठंडी पड़ती जा रही है। 'खोया हुआ आदमी' भी इसी तरह की उलझन में फंसे मनुष्य की व्यथा को प्रकट करती है।

सुकेश साहनी भी अग्रणी लघुकथाकारों में गिने जाते है। इन्होने अपने सृजन से लघुकथा को विस्तार प्रदान किया। सुकेश साहनी की कई लघुकथाएँ है जो मन–मस्तिष्क को झकझोरने का कार्य करती है। 'ग्रहण' लघुकथा वर्तमान मानसिकता को व्यक्त करती है कि कैसे एक पिता प्रकृति में हो रहे 'ग्रहण' जो कि आकाशीय घटना है को न दिखाकर किताबी भाषा में लिखे 'ग्रहण' रूपी पाठ को रटाये जा रहा है। इसमें बाल–सुलभ जिज्ञासा को शांत करने की बजाय कठोरता का इस्तेमाल किया जाता है, जो कि गलत है।[10]

**'यम के वंशज'**

''बहिन जी! उसने दर्द से कराहते हुए पुकारा, ''ऐ बहिन जी! '' इमरजेन्सी वार्ड के ड्यूटी रूम में नर्स ऊंघ रही थी। उसने उस औरत की पुकार की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। आज वह फुरसत में थी। केवल इस औरत के अलावा और कोई केस नहीं था।

''बहिन जी... तनिक देखि ल्यों। अब दरद बरदास से बाहर हुई गवा हय।''

''क्या है ?'' अबकी नर्स गुस्से में पैर पटकती हुई आई ''काहे चिल्ला रही हो..... हंय.....? ''

''भौत तकलीफ मारे दर्द के उसके दांत भिंच गए थे।

''तकलीफ नहीं तो क्या मजा आएगा। पेट में बच्चा डलवाते समय क्यों नहीं सोचा, चुपचाप पड़ी रहो। सुबह से पहले कुछ नहीं होने का।''

नर्स ने आंखे निकालकर कहा और बड़बड़ाई'' मेमसाहब के दर्द हो रहा है.... पूरा अस्पताल सिर पर उठा रखा है.....'' और ड्यूटी रूम में लौट आई।

इघर कुछ देर चुप्पी के बाद उस औरत ने फिर चिल्लाना शुरू कर दिया, 'अरे ओ बहिन जी... ओफ ! दया करिके डॉक्टरनी को बुलवाय ले ओहांय हाय दईया रे अब तो आय जाव..... मरि जाव... .... अब नाहिं बचव'' चीखने चिल्लाने की आवाजें बढ़ती जा रही थी और नर्स इत्मीनान से बैठी ऊंघ रही थी। थोड़ी देर बाद उसका चिल्लाना बंद हो गया।

''बहिन जी! अब तो आय हिंया से.....'' औरत की थकी–थकी उसने लापरवाही से अंगड़ाई ली। जाव बच्चे का तो उठाय लेयो आवाज सुनकर नर्स चौंकी और फिर

''अरे माया।'' नर्स ने जमादारिन को आवाज दी ''देख तो जरा बारह नम्बर को, बच्चा अलग कर दे। ये लोग इतने गंदे होते है कि पास जाते भी उल्टी आती है।''
वार्ड ब्वॉय मुख्य द्वार पर आकर चिल्लाया ''बारह नम्बर के साथ कौन है? चलो चलो सिस्टर बुलाती है।''
अस्पताल के बाहर की भीड़ से एक देहाती आदमी तेजी से उठकर वार्ड ब्वॉय के पास आ गया। ड्यूटी रूम में पहुँचकर वह सकुचाया सा एक तरफ खड़ा हो गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर हुआ क्या। ''इधर दस्तखत करो।'' स्टाफ नर्स ने एक कागज उसकी ओर बढ़ा दिया। उसने इशारे से बताया कि वह अंगूठा लगाएगा। बिना कुछ समझे उसने कागज पर अपना अंगूठा लगाया और एक तरफ खड़ा हो गया। कागज पर लिखा था, ''मैं अपनी मृत पत्नी एवं बच्चे की लाश लिए जा रहा हूँ। अस्पताल में की गई चिकित्सा से मैं संतुष्ट हूं। मुझे यहां के किसी कर्मचारी से कोई शिकायत नहीं हैं।[11]
यह स्थिति वर्तमान समय में भी जस की तस बनी हुई। आये दिन अखबार में प्रसूता की अधिक रक्त बह जाने से मृत्यु होने की खबरें छपती रहती है, जिन्हे ऊपरी लीपा पोती द्वारा दबा दिया जाता है। परिवार वालो के पास सिवाय आंसू बहाने के कुछ नही होता हैं। चिकित्सा विभाग में कार्यरत डॉक्टरों से लेकर वार्ड ब्वॉय तक की स्वार्थपरता, लापरवाही व असंवेदनशीलता को इस लघुकथा के माध्यम से व्यक्त किया जाता है।
लघुकथा की विकास यात्रा में 'खेमकरण सोमन' का भी योगदान रहा है। खेमकरण सोमन की कुछ लघुकथाएँ अनायास ही मन को विचलित कर मस्तिष्क को सोचने पर मजबूर करती है। हिन्दू–मुस्लिम विवाद को लेकर लिखी गयी 'इनसान' लघुकथा बेहद संवेदनशील है।
''दंगे ने पूरे शहर को चपेट में ले लिया था और वह अपनी जान बचाकर भाग रहा था। परन्तु ज्यादा दूर तक भाग न सका सामने ही दस–पन्द्रह दंगाई खड़े थे। वह अंदर तक कांप गया।
'क्या नाम है तुम्हारा' ? उनमें से एक दंगाई ने पूछा।
'मेरा..... मेरा नाम रहीम है।' वह घबराया 'मुझे जाने दो। ओह, 'ये तो अपनी ही जाति बिरादरी का है। उन दंगाइयों में से वही पहला बोला ठीक है जाओ। निकल जाओ।'
'विश्वग्राम' लघुकथा में बढ़ते संचार के साधनों की उपयोगिता को बताते हुए कहा गया है कि किस तरह ''नई–नई तकनीकियों आ गयी है। टीवी, मोबाइल, इन्टरनेट और उपग्रह आदि इन प्रौद्योगिकी संजालो ने तो आदमी को आदमी के और भी करीब ला दिया है।'' लेकिन अंत में किस तरह मनुष्य अपने ही परिवार के सदस्यों से कितना दूर हो गया है, उसमें कितनी असंवेदनशीलता आ गयी है, बताया गया है
''काफी देर हो गयी, एक साहब ने कहा देश दुनिया, तकनीकी पर बातचीत करते हुए। अब हमें अपने–अपने पिताजी से मिल लेना चाहिए। ''जी हॉ, बिल्कुल बिल्कुल। दूसरे साहब ने कहा 'आइए चलते है। दोनों साहब थोड़ी दूरी पर स्थित वृद्धाश्रम की ओर बढ चले।[12]
यांत्रिक विकास ने सिर्फ यंत्रों को ही जन्म दिया है। यंत्रों की अतिशयता में कहीं न कहीं मनुष्य स्वयं भी यंत्र सदृश हो गया है। मानवीय संवेदनाओं का अस्तित्व खतरे में पडता नजर आ रहा है। जो इंसान अपने माता–पिता तक को वृद्धाश्रम में रखते है. वह कैसे मनुष्य–मनुष्य के करीब होने की बात कर सकते है। सिर्फ नजदीक रहने से तो भावात्मकता नहीं आ सकती है।
लघुकथा की विकासयात्रा में 'सतीशराज पुष्करणा' के कृतित्त्व को छोड़ा नहीं जा सकता। पुष्करणा जी ने अपने जीवन को लघुकथा के उत्थान में ही समर्पित किया है। इन्होंने आधुनिक समय की परिस्थितियों का अवलोकन करते हुए अनेक हृदयस्पर्शी लघुकथाओं का सृजन किया। इनके लघुकथा सर्जन पर विचार प्रकट करते हुए अनिता नायर ने लिखा है कि, ''पुष्करणा जी की लघुकथाओं का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। शायद ही कोई विषय ऐसा होगा, जो उनकी पारखी निगाह से बचा होगा। समाज और राजनीति से लेकर मानवीय संवेदनाएँ तथा हृदय और मस्तिष्क के उलझते हुए धागों का भी खूबसूरत वर्णन एवं चित्रण आपकी लघुकथाओं में दृष्टिगोचर होता है।[13]
आधुनिक समय में शराब किस तरह युवाओं का जीवन बर्बाद कर रही है, इतना ही नहीं महिलाएँ भी इसकी खुमारी में अपनी मर्यादा खोती नजर आती है। युवा वर्ग संस्कारों से बहुत दूर हो गया है। चाहे भाई हो या बहिन सभी संस्कार विहीन नजर आते है। इसी संस्कार विहीन संस्कृति को उजागर करती
पुष्करणाजी की 'उच्छलन' लघुकथा–''बहन के हॉस्टल जाने के बजाय उसने सर्व प्रथम मुंबई में पुराने साल की विदाई और नये साल के स्वागत समारोह का आनंद लेने का निर्णय लिया।
भारतीय सभ्यता पर पश्चिमी सभ्यता पूरी तरह से हावी हो चुकी है। पश्चिमी सभ्यता की देखा–देखी में युवा वर्ग भारतीय सभ्यता के प्राचीन मूल्यों का बहिष्कार करते जा रहे है। इसी तरह सतीशराज पुष्करणा की लघुकथा 'अपाहिज' भी युवा वर्ग की सोच में आये बदलाव को चित्रित करती है–
''पश्चिमी रंग में रंगते जा रहे एक पुत्र ने किसी तरह साहस जुटा कर अपने भारतीय रंग में रंगे संस्कारी पिता से कहा, 'पापा मैं शादी करना चाहता हूँ।'

''क्यों ?''
''मुझे प्यार हो गया है।''
''बेटे पहले अपने पैरों पर खड़े हो जाओ, फिर जो जी में आए करना।''
''पापा ! अगर मैं अपने पैरों पर खड़ा नहीं भी हो सका हैं तो क्या हुआ।
वह तो अपने पैरों पर खड़ी है।[14]

सतीशराज पुष्करणा की 'मन के सांप लघुकथा भी आधुनिक मानव की छटपटाहट को व्यक्त करती है।
''आधुनिक समय में अकेली स्त्री को देखकर किस तरह के मनोभाव विकसित होते है, इसका पुष्करणा जी ने बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रण किया है। पुष्करणा जी ने अपनी लघुकथाओं में मर्यादा का कभी उल्लंघन नहीं किया, शायद इसीलिए इस लघुकथा का कथानायक नौकरानी को कमरे में कुण्डी लगाकर सोने को कहता है।[15]
डॉ. (इ.) केदारनाथ भी परिस्थितियों में हो रहे परिवर्तनों से परिचित थे। किस तरह पश्चिमी संस्कृति फैलती जा रही है और मनुष्य उसमें घुसता चला जा रहा है। इसका इन्होने अपनी लघुकथाओं में बखूबी चित्रण किया है। भारतीय नारी की सोच में आये परिवर्तन को उन्होने अपनी लघुकथाओं का विषय बनाया है। इनकी 'मन पुरुष', 'बुरा नहीं अंग प्रदर्शन' व 'विदेश जाने का रहस्य इस प्रकार की लघुकथाएँ है।
जहाँ पहले भारतीय नारी के लिए लज्जा ही श्रृंगार होता था। पूरे कपड़ो में नारी अधिक सुन्दर लगती थी, वहीं आज की नारी स्वयं ही कम कपडे पहनकर अंग प्रदर्शन को बढ़ावा देने की बात करती है–
भारतीय संस्कृति जहाँ सभी संस्कृतियों की जननी कही जाती है, वहीं इसी जननी का अपमान क्यों हो रहा है, समझ नहीं आता।
शकुन्तला किरण के द्वारा भी आधुनिक रंग में रंगते जा रहे ग्रामीण युवावर्ग की तस्वीर को लघुकथा के माध्यम से चित्रित किया है। शकुन्तला किरण की 'कोहरा' व 'बेटी' इस प्रकार की लघुकथाएँ है, जिसमें पिता व माता अपने पुत्र–पुत्री के स्वभावगत आचरण में आये बदलाव को समझ ही नहीं पायें। 'कोहरा' लघुकथा में जब एक ग्रामीण पिता अपने पुत्र से मिलने शहर जाता है और कहता है कि वह पिता बन गया है और उसे घर

चलना चाहिए। जबकि बेटा इससे बहुत नाराज हो जाता है, क्योंकि शहर में गौरी मेमसाहब के बीच उसकी इज्जत खराब होती वह यह नहीं चाहता कि कोई भी यह जाने कि वह शादीशुदा है और होने वाला बच्चा उसका है, इसलिए बात काटते हुए कहता है ''माय

प्रेमलता वैष्णव के द्वारा भी अनेक लघुकथाओं की रचना की गई है, उनमें से कुछ लघुकथाएँ एकाएक ध्यान आकर्षित करती है। ऐसा लगता है लघुकथाओं में चित्रित घटनाएँ आस–पास ही घटित हो रही है। 'बैंक बैलेंस', सौदा, स्याह सफेद लघुकथाएँ समाज में बदली मानसिकता को प्रकट करती है।

दहेज रूपी दानव अब भी अपनी जड़े जमाए हुए हैं। अगर लड़का नौकरीपेशा है तो भी उसे लाखों रूपये का दहेज दिया जाता है। डॉक्टर लड़का बिना दहेज के शादी नहीं कर सकता है। यही लोगों की सोच है–'सौदा लघुकथा में ''इसमें आश्चर्य की क्या बात है भाई, यह रकम तो बहुत कम है उसके लिए। शरद एम.बी.बी.एस. डॉक्टर है. एम.डी. भी कर रहा है। कोई लल्लू–पंजू चपरासी तो है नहीं।[16]

कहीं न कहीं समाज भी दहेज का समर्थन ही कर रहा है। जो कि गलत है।

स्याह–सफेद' लघुकथा में वर्तमान स्थिति को बड़ी ही सटीकता से प्रस्तुत किया गया है। पुरुष वर्ग या युवा वर्ग द्वारा फैशन परस्त महिलाओं की ओर ध्यान देनी की बात कुछ अलग तरीके से कहीं गई हैं। जब अधेड़ उम्र की माँ बालों को रंगे व लिपस्टिक लगाये तो उसके युवा पुत्र को अच्छा नहीं लगता। तब उसकी माँ जो उत्तर देती है, वह है, ''मगर बसों में मेरी उमर की सफेद बालोंवाली औरतो को खड़ी देखकर भी न देखने का बहाना बनाए, महिलाओं की सीटों पर डटे तुम्हारी उमर के नौजवानों को तो जरा शर्म नहीं आती। भीड चाहे जितनी भी हो, पर रंगे बालो और रंग–रोगन की बदौलत ही मैं आराम से बैठकर सफर करती हूँ।[17]

मनोज सोनकर द्वारा लिखी गई लघुकथाएँ आधुनिक होने के साथ–साथ भाषा के कारण कुछ अलग तरह की प्रतीति भी देती है। उनके द्वारा लिखी गई लघुकथाओं में 'खतरा', हीरा–मोती, मुक्ति, निर्णय', 'हिदायते', 'दाना, आदि प्रमुख है। खतरा' लघुकथा में अस्पताओं में हो रही गड़बड़ियों को दर्शाया गया है– ''इंजीनियर इन्द्रेश के बूढ़े पिता बीमार है। उन्हे अस्थमा है, उन्हे चक्कर भी आता है। ब्लड प्रेशर भी हाई है, कभी–कभी पेशाब करने में भी कठिनाई होती है।

निःसंदेह आजकल होटलों में शादीशुदा जोड़ो की गंदी तस्वीरे खीच ली जाती है और उन्हे ब्लेकमैल किया जाता है। उसके परिणाम स्वरूप कई बार जोड़ो को आत्महत्या तक करनी पड़ती है। यह आधुनिक समय की प्रमुख समस्या बनती जा रही है।

मनोज सोनकर की 'दाना' लघुकथा वर्तमान समय में हो रही वेतन विसंगति की ओर इशारा करती है। जब शिक्षक अपने वेतन वृद्धि की मांग के लिए मंत्रालय के पास पहुँचते है तो उन्हे रोकने के लिए ब्लाकेज लगाए जाते है। उन पर लाठीचार्ज किया जाता है, वहीं दूसरी तरफ ''सांसदो की वेतन वृद्धि मंजूर अब उन्हें प्रति माह पाँच लाख मिलेंगे। देखिए। यह अखबार (नवभारत टाइम्स, 20 अगस्त, 2010) देखिए। महेशजी नरेश झल्लाए है।

अधिकांश सांसद तो करोड़पति है। करोड़ पतियों को मुँह माँगा वेतन मिल रहा है और हमें लाठियों मिल रही है। महेश कराहे है।

अमेरिका, इंग्लैण्ड और जर्मनी के सांसदों का वेतन भी अपने सांसदों से कम है।

क्या कहते हो।

सच कहता हूँ। अपने सांसदो की वेतन वृद्धि तीन सौ प्रतिशत हुई है तीन सौ प्रतिशत इसके बाद भी वे ज्यादा माँग रहे है। भर पेटों को खीर मिल रही है। और खाली पेट दाने को तरस रहे है। महेश चश्मा साफ किए है।

खाली पेटों को दाना छीनना होगा। नरेश गंभीर हुए है।[18]

दिनेश त्यागी की भूमिहीन लघुकथा में निर्धन व्यक्तियों के हक को खाते हुए दिखाया गया है। समर्थ व्यक्ति भी गरीबों से उनका हिस्सा लूट लेना चाहता है।

विपिन जैन की 'बैरंग पत्र भी दफ्तरी भ्रष्टाचार को व्यक्त करती हुई लघुकथा है–

''बड़े साहब के पी.ए. रामबाबू ने आकर अपनी कुर्सी संभाली। साहब के आ जाने का पता लिया। इसके बाद वह चाय का आर्डर देकर कुर्सी पर आरामपूर्वक बैठकर अखबार पर सरसरी नजर डालने लगे। चाय आयी तो उन्होने गर्दन झटककर अखबार छोड़ दिया और मुंह बनाया। हूँ, कोई खास खबर नहीं, वहीं रोना। भ्रष्टाचार–भ्रष्टाचार अपना घर कोई नहीं देखता। चाय की घूंट के साथ उन्होंने दिन की डाक देखनी शुरू की। डाक में 'अति आवश्यक' पत्र छांटते हुए उनकी नजर एक लिफाफे पर पड़ी लिखा था कांफिडेशियल भारत सरकार' उन्होंने तुरंत वह लिफाफा खोला। अंदर रखा पत्र पढ़ा फिर पढ़ा। अमूमन वह एक बार ही पढ़कर समझ जाते है। निश्चित दफ्तरी भाषा समझने में उन्हे कोई दिक्कत नहीं होती। पर इस समय हुई। दिमाग पर अधिक जोर न देते हुए उन्होने बड़े साहब के पास भेज दिया। साहब ने पढ़ा और तत्काल सहायक अधिकारी के पास भेजा, सहायक अधिकारी ने पढ़ा और जल्द ही विभागीय अध्यक्ष के पास भेज दिया। उन्होने पढ़कर थोड़ा सोचा और बड़े बाबू के पास पहुंचाया। बड़े बाबू ने पढ़ा और तुरंत अपने विश्वसनीय लिपिक को बुलाया। तत्काल उस पर एक नोट लिखाया 'असंबद्ध पत्र'। नोट के साथ प्रॉपर चौनल' में वह पत्र फिर पी.ए. रामबाबू की मेज पर आ गया। पी.ए. ने एक नये लिफाफे में रखा। उस पर 'भारत सरकार लिखा और डाक में डलवा दिया।

अब आप जानना चाहेगे कि उस पत्र में क्या लिखा था। तो सुनिये, उसमें लिखा था–

''अपने विभाग के भ्रष्ट अधिकारियों व कर्मचारियों की सूची भेजें। यह स्थिति आज भी वैसी ही बनी हुई है। हर विभाग भ्रष्टाचार रूपी दीमक द्वारा खाया जा रहा है।[19]

आलोक कुमार सातपुते का लघुकथा प्रेम भी कम नहीं है, उनके द्वारा रचित कई लघुकथाएँ आधुनिक पीड़ा को व्यक्त करने में सफल हुई है। इनके द्वारा रचित ''नई जात'', ''एक आधुनिक आदमी'', ''अंह''. ''रात'', ''मुहब्बत''. ''अपना खून'' व ''बाजार' प्रमुख लघुकथाएँ है। 'नई जात' जातिगतता पर आधारित लघुकथा है–

''सोशल नेटवर्किंग के बढ़ते प्रभाव ने भी मानवीय मूल्यों के ह्रास को बढ़ावा दिया है। अखिलेश शुक्ल की सीख लघुकथा में भी नेट जन्य प्रेम के खोखलेपन का चित्रिण किया गया है। जहाँ बिना देखे युवक–युवती में प्रेम होता है, बाद में उचित स्थान पर मिलने का वादा किया जाता है और युवती के विकलांग होने पर युवक द्वारा उसे दूर से ही देखकर छोड़ दिया जाता है। यह प्रेम नहीं हो सकता है। स्वार्थी मनोवृति को ही चित्रित करती है।[20]

चूंकि ''आधुनिकता का विकास शहर ही माना जाता है।'' इसलिए शहरों में या महानगरीय जीवनशैली में मन के भावों का कहीं कोई स्थान नहीं है। यहाँ अजनबी पूर्ण जीवन देखने को मिलता है। सिर्फ दिखावा करना ही यहाँ की आधुनिकता की परिभाषा है। इसी भावना को व्यक्त करती है– मनोज अबोध की लघुकथा ''स्टेटस सिंबल''

पहले जब नौकरी लगती थी, सगाई होती थी या शादी होती थी तो गली–मोहल्ले में मिठाई बांटने की रीति निभाई जाती थी, अब

आधुनिकता की दौड़ में प्रदीप शशांक की लघुकथा प्रश्नचिन्ह इन सभी रीतियों को बहुत पीछे छोड़ आई है –

''आंटीजी तो नहीं है, वे बाजार गई है।''
''ठीक है अंकल ये मिठाई रख लीजिये।''
''मिठाई..... किस खुशी में..... मैंने पूछा।

सोनल ने कुछ शरमाते और मुस्कुराते हुए कहा– ''अंकल, वो मुझे तलाक मिल गया है ना, उसी की मिठाई है।''''
देव शर्मा की 'जल संरक्षण', 'नशा' व 'थाली कैसे बजेगी' भी आधुनिक समस्याओं को उजागर करती है। 'जल संरक्षण लघुकथा में विरोधाभास को चित्रित किया गया है–
''बड़े साब ने नौकर से कहा मैं अभी जल संरक्षण अभियान की मीटिंग में जा रहा हूँ जरा मेम साब को कह दो। कहाँ है मेम साब दिखाई नहीं दे रही है। साब मेम[21]

## संदर्भ सूची


1. श्रीराम बा. महाजन, पृ. 117
2. बनवीर प्रसाद शर्मा डॉ कृष्ण कान्ता दसवें दशक की कहानी, पृ. 20
3. जगदीश गुप्त, नयी कविता दृ स्वरूप और समस्याएँ, पृ. 24
4. राकेश कुमार, अज्ञेय का कथा पक्ष, पृ. 13
5. कथाक्रम अक्टूबर – दिसम्बर 2010 पृ. 40
6. कथाक्रम, जुलाई–सितम्बर 2011 पृ. 16, 48
7. इंटरनेट इसवहेचवज.बवउ सागरिका, कमल चोपड़ा की लघुकथाएँ– एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, शुक्रवार 13, मई 2016
8. 'इटरनेट इसवहेचवज.बवउ सागरिका, कमल चोपड़ा की लघुकथाएँ एक विश्लेषणात्मक अध्ययन शुक्रवार 13, मई 2016
9. रमेश बतरा सतीश राज पुष्करणा 'लघुकथा डॉट कॉम अध्ययन रुथा, हिन्दी लघुकथा के उल्लेखनीय हस्ताक्षर
10. शिवनारायण : 'लघुकथा डॉट कॉम अध्ययन जक सुकेश साहनी की लघुकथ्याओं में समकालीन संकट
11. रातीश राज पुष्करमा, कथादेश– 530–40
12. कथाक्रम अक्टूबर–दिसम्बर 2013, पृ. 69
13. मिथिलेश कुमारी मिश्र, 'लघुकथा डॉट कॉम दस्तावेज सतीशराज पुष्करणा की लघुकथाओं की पड़ताल पोस्ट सितम्बर 01, 2016
14. सतीशराज पुष्करणा 'कथादेश सं., पृ. 450
15. अशोक भाटिया मन के सांप सतीशतज पुष्करमा निर्वाचित लघुकथाएँ. अशोक भाटिया, पृ. 149
16. प्रेमलता वैष्णव, प्रेमलता वैष्णव, पृ. 88
17. श्रेष्ठ प्रैमलता वैष्णव, लघुकथाएँ, पृ. 92
18. मनोज सोनकर, लघुकथा शतक, पृ. 42
19. सारिका 16–28 फरवरी 1956, पृ. 28
20. अखिलेश शुक्ल, हंस पत्रिका, सीख, अप्रैल 2011 पृ.स. 43